A-37

SEAT No._____ No. of Printed Pages : 02

SARDAR PATEL UNIVERSITY

T.Y. B.A. (External) Examination
Friday, 05th, April 2019
Time : 10:00 am to 1:00 pm
HIN306 : HINDI-VI
प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता

कुल गुण : १००

प्रश्न १. ससंदर्भ व्याख्या कीजिए। (१८)

(क) तलफै बिन बालम मोर जिया।
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदया,
तलफ तलफ के भोर किया॥
तन मन मोर रहेंट-अस डोलै,
सुन्न सेज पर जनम छिया।
नैन थकित भये पंथ न सूझै,
सोंई बेदरदी सुध न लिया॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
हरो पीर दुख जोर किया॥

अथवा

(क) अँखियाँ तो झाई परी, पंथ निहारि निहारि।
जीहड़ियाँ छाला पड्या नाम पुकारि पुकारि॥
बिरह कमंडल कर लिये, बैरागी दो नैन।
माँगै दरस मधूकरी, छके रहैं दिन रैन॥
सब रंग ताँत रबाब तन, बिरह बजाबै नित्त।
और न कोई सुनि सकै, कै साई कै चित॥

(ख) कबहूँ ससि माँगत आरि करैं कबहूँ प्रतिबिंब निहारि डरैं।
कबहूँ करताल बजाइ कै नाचत, मातु, सबै मन मोद भरैं॥
कबहूँ रिसिआइ कहैं हठि कै, पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं।
अवधेस के बालक चारि सदा तुलसी-मन-मंदिर में बिहरैं॥

अथवा

(ख) रावन की रानी जातुधानी बिलखानी कहैं,
"हा हा ! कोऊ कहै बीस बाहु दसमाथ सों।
काहे मेघनाद, काहे काहे, रे महोदर ! तू
धीरज न देत, लाइ लेत क्यों न हाथ सों ?"
काहे अतिकाय, काहे काहे रे अकंपन !
अभागे तिय त्यागे, भौंडे भागे जात साथ सों ?
तुलसी बढ़ाय बादि सालतें बिसाल बाहैं,
याही बल, बालिसो ! बिरोध रघुनाथ सों"॥

(ग) अति सुधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपुनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ इत एक तें दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौं कहौं मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥

अथवा

(P.T.O.)

(ग) महीं-दूध सम गनै, हंस-बक-भेद न जानै।
कोकिल काक न ज्ञान, काँच-मनि एक प्रमानै ॥
चंदन-ढाक समान, राँगु रुपौ सम तोलै।
बिन बिबेक गुन-दोष, मूढ कबि ब्यौरि न बोले ॥
प्रेम-नेम, हित-चतुरई, चे न बिचारत नेकु मन।
सपने हूँ न बिलबियै, छिन तिन ढिग आनंदघन ॥

प्रश्न २. निर्गुण काव्यधारा की विशेषताओं के आलोक में कबीर का मूल्यांकन कीजिए। (१६)

अथवा

प्रश्न २. "कबीर आज भी प्रासंगिक है" - सोदाहरण चर्चा कीजिए।

प्रश्न ३. 'कवितावली' का कथानक लिखते हुए उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (१६)

अथवा

प्रश्न ३. भावपक्ष और कलापक्ष की दृष्टि से 'कवितावली' की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न ४. "घनानंद की कविता में विरह, प्रेम एवं सौंदर्य तीनों का अन्यतम चित्रण हुआ है" - इस कथन की उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए। (१६)

अथवा

प्रश्न ४. घनानंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न ५. टिप्पणी लिखिए। (१६)

(क) मीरा का जीवन एवं साहित्य।

अथवा

(क) भूषण के काव्य की प्रधान विशेषताएँ।

(ख) सूफी कवि जायसी।

अथवा

(ख) रसखान।

प्रश्न ६. निम्नलिखित अतिलघुत्तरी प्रश्नों में से किन्हीं अठारह के उत्तर लिखिए। (१८)

(१) कबीर के गुरु का नाम क्या था ?
(२) कबीर की कविता का उद्देश्य क्या है ?
(३) बीजक में कितने भाग हैं ?
(४) कबीर किस धारा के कवि हैं ?
(५) कबीर के पालक माता-पिता के नाम क्या हैं ?
(६) कबीर ने परमतत्त्व के लिए किन-किन सम्बोधनों के प्रयोग किये हैं ?
(७) कबीर को वाणी का डिक्टेटर किसने कहा है ?
(८) कवितावली का सबसे बृहद कांड कौन सा हैं ?
(९) तुलसी दास के समय किस मुसलमान राजा का शासन था ?
(१०) 'लंकाकांड' की मुख्य घटना कौन सी है ?
(११) सगुण भक्ति की दो शाखाओं के नाम क्या है ?
(१२) तुलसीदासजी ने कौन सा महाकाव्य लिखा है ?
(१३) किष्किन्धाकाण्ड में किस प्रसंग का वर्णन है ?
(१४) हिन्दी साहित्य के पूर्व-मध्यकाल को अन्य किस नाम से जाना जाता है ?
(१५) रीतिकाल के काव्यों में किस रस की प्रधानता रही है ?
(१६) घनानंद के दरबारी विरोधियों ने इर्ष्यावश क्या षड्यंत्र रचा था ?
(१७) घनानंद रीतिकाल की किस धारा के कवि थे ?
(१८) घनानंद का सम्बन्ध किस राजदरबार के साथ था ?
(१९) घनानंद वैरागी क्यों बन गये ?
(२०) आचार्य शुक्लजी घनानंद के बारे में क्या कहते हैं ?
(२१) घनानंद किस बात से अधिक दुखी थे ?